

DPN 6166

Title : नवग्रहस्तोत्र

NAVAGRAHA STOTRA

Run. No. 6857

Cat. No.

Micro. No.

Subject Stotra

Religion Hindu / Bauddha

Language : Skt. / New. / Nep. / Skt.- New. / Maith.- New. / New.- Nep. /

Size in cms. 19.5 x 6

Folios 21

Lines (in a page) 5

Compl. / Incompl.

Chapt. / act /

Author / translator

Scribe / donor

देवश शक्तीन्द्र मह
फणीन्द्ररत्न वज्राचार्य

Date: NS / SS / VS / KS 963

Ruler / place

Script : New. / Dev. / Bhuj. / Ran. /

Illus. :

Material : palmleaf / paper / thyaśaphu /

Condition : fine / damaged by worms, rats, water /

ॐ नमो ॥ आदित्याय नमः ॥ ॥ नवग्रहाणां सर्वेषां...

Beginning, colophon, post-colophon : ॐ नमो श्रीमञ्जु श्री गुरु व्य नमः ॥

- ① इति श्रीभविष्यपुराणे आदित्यस्यास्तौ तैश्च शतनाम स्तोत्रं समाप्तं ॥
- ② इति श्रीस्कन्दपुराणे अंगारकस्तोत्रं समाप्तं ॥
- ③ इति श्रीपद्मपुराणे बुधस्य पञ्चविंशति नाम स्तोत्रं समाप्तं ॥ →

- ④ इति श्रीस्कन्दपुराणे बृहस्पतिस्तोत्रसमाप्तं ॥
- ⑤ इति श्रीस्कन्दपुराणे शुकस्तोत्रं समाप्तं ॥
- ⑥ इति श्रीभविष्यपुराणे शनिश्चरस्तोत्रस्तवराजसमाप्तं ॥
- ⑦ इति श्रीस्कन्दपुराणे राहुस्तोत्र समाप्तं ॥
- ⑧ इति श्रीस्कन्दपुराणे कैतोः पञ्चविंशति नाम स्तोत्रसमाप्तं ॥
- ⑨ (मङ्गला, पिङ्गला, धन्या, उल्का, सङ्कटा मन्त्र)
- ⑩ इति मेरुआगेमे कैलसराजेश्वरे श्रीउल्कादेव्या स्तोत्रं ॥
- ⑪ (शिवस्तोत्र)

अथ श्री गणेशाय नमः

नेत्रं। मयः न ना बु म द वे म वे न रु द्ध म ज वि श्व वि मो ह न त्रं। अथ पू
मा रा धा ग जा न नं त्वा म वा पि शा ला णि प ठ त्ति ते मां। त्व त्तो न वा
न्य त्पु णि पा थ म हि। त दं। त्तो वे। स त्प म स त्प क ल्पं। हि रं ए व ग भ
ग न दी। सि ता रं क वि पु रा। र वि म ड ल्प थं। कु श श या को नु म नं तं
म यु तं ~~तत्तत्~~ स त्प का ल यो गै त्त म ह्प प धे॥ ग जा न नं य त्त म ह सा
ज ना नां वि प्रा त्त का लो वि ल्पं प्र या ति। श भो स मा लो क्य ज रा

विना मकुटया पूजा विना मास न कर्ष्यते । विना मक्षार्चयेत्पानी न सर्वं निस्कृतिं हव ॥
उत्तमानि लपूजा स्यात्पूज्यमापर्व पूजनी मास पूजा धमाद वि । माता दूष्ट ५ मु हव ॥

चक्रसमर

उं न मां श्री महामज्जु श्रीगुनू वनमः ॥ षड्गुणू दूधनू सहितनं - जानाडा पमास
न - जानिमुपशुयागू स कलया प्रयां नगू मधुलं - नाना सासु विद्या जेला
क स कलयां मालि शया विष्क क श्री - ननाथ क ल्यालया च नन सपु जा जया
थ उज्जिपिं - मुकुल शया पिं जीपिं स क स्यातं - जानसू वीधे ह नं गिधि सिधि ह नं
स सासु सहितं - वाक्य मंगु सिधि न न सपु र्ध्व व न द न वि आ ज मि न प्रा धा दि

पा वरु का - वाधिसाग छाया म मा नथ पून या ना विष्क दू ध का - ॐ श
थ जं मू स न या ज दू दू थ श्र धा न या रा व या ध ६ : धी पीं उ प न स द्या सु
दृष्टि स्वया विह गू न ॥ ॐ ॥ मै त्रि रत्ने न लिखा पि ता शुभ

श्री नवग्रहो को वरु स

लिखितं वा रं

ॐ नमो ॥ आदि साय नमः ॥ ॥ नवग्रहासीसर्वेषां सूर्यादीनां पृथक् पृथक् योजनं
दृष्ट्वा तज्जं न जायते सततं ॥ ॥ पीठनाथमयनाजीदनामानिष्ठधुराखत ॥ सूर्याः
दीनाः सर्वेषां योजनं धति ॥ ॥ आदित्यसवितामर्यः पूषाशुक्राग्निविहमि ॥ दिनः
नाथदिनकनः सप्तसप्तः पुराकनः ॥ विरवसुर्षट्कर्क वेदांगवेदवाहनः ॥ हस्तिद
धवः कालचक्रः कर्मसाक्षी जगत्पतिः ॥ पद्मिनीवधकीरा नरुक्कनृधकनः ॥ द्वादश
साविष्ठकर्मालोहितारसमीन्द्रः ॥ जगन्नाथनविदाहः कालासाकठधयासेजः ॥

रुताग्र्याग्रहापतिः सर्वलोकनमस्तुतः ॥ जवाकसुससंकाशः राखानदितिनन्दनः ॥
अनुरागिहः सर्वालोकाकनृगाविकर्कनः ॥ मार्कण्डेयमिहिनः धृतरूपमीलोकताप
नः ॥ जगत्कर्कजयसाक्षीधनीधनपिता जयः ॥ सहस्रनक्षत्रनक्षिर्गवा नरुक्क
वमलः ॥ विवधनादिदेववदवदवादिवाकने ॥ धन्यनृनिद्यापिहर्कटदेवकृष्ण
विनाथना ॥ चराचरासामेशुशामिनीविष्णुविकर्कनः ॥ कोकाशकासहर्कचक
मलाकनशशसु ॥ नानायसमहादेवीन्द्रः पूनसंशुधनः ॥ जीवासापसासाच

प्रसहं रिकिसंज्ञकस्य पीणविनध्यति॥ ग्रहादीनां सप्तसां रवेचन्द्रवत्सदा॥
ॐ तिष्ठा च दमसा विंशतिनामस्मात्समाफं॥ ॥ अथ श्रीगणेशाय॥ १ॐ न
मो मंगलाय॥ अथ गणेशः कश्चिद्वला लोहितान्गधरासूक्तः॥ क्रमात्तमंगलाः
श्रीमो महकाशीधनप्रदः॥ सृष्टिहर्त्रा विष्णु कर्माग कर्मागनाशनः॥ विष्णु
प्रशवधकनः कामदा धनद कर्जः॥ सामगाने प्रिया नक्तचवोधकः॥ सामग
नप्रिया नक्तनक्तन कायने कर्मो लोहितोत्रक वधुर्वधु सर्वकमाचवोधकः॥ न

कमान्यधराहमकुर्भुलीग्रहनाथकः॥ नामान्यतानिरोमस्ययन्य० सतर्तन
नः॥ सृष्टिहर्त्रा च दमसा विंशतिनामस्मात्समाफं॥ धनमाप्नोति विपुलं सूर्यं
धेवमना नमो॥ वधुर्वधु तत्र पूर्णल एतेनावसठायः॥ याचैथं देहा रोम
स्यमंगलवदुपस्यकेः॥ सवनि स्येति पीणचतस्य ग्रहकर्ता कुर्वी॥ ॐ तिष्ठा
कचुपनाथ अथ गणेशः कश्चिद्वला लोहितान्गधरासूक्तः॥ क्रमात्तमंगलाः
वधुर्वधु मता अथ वधुर्वधु दाता वधुर्वधुः॥ प्रियं गु कलि काष्ठं मे कर्जनेन

सनाहनः॥ ग्रहाणामाहिहयानदृष्टमदयाकरः॥ विनूदकायहर्षाचसोम्या
वृद्धिविवर्धनः॥ वेदात्मजीविष्णुतृपीकानिनाहानिनायकः॥ ग्रहपीणहनादनेषु
अथपठुप्रदः॥ लोकप्रियसोम्यमूर्तिर्गुह्यदागुह्यवत्सलः॥ पञ्चविंशतिनामानिव
धस्येतानियः पठता॥ स्मृत्वावर्धसदागस्यपीजसुविविभञ्जति॥ नदिनेवाप
० द्यमुलरुने समभागते॥ ॐ तिष्ठीपञ्चपूनाद्यवुधस्यपञ्चविंशतिनाम

स्मोतंसमापे॥ ॥ अथवहस्यतथ॥ ॐ नमोगुत्रवेनमः॥ गुत्रवहस्य
तिक्तीवः सुनावायविद्योवनः॥ वागीष्मविष्यदाद्यधमः पीताम्बुनस
धीः॥ सुधादृष्टिग्रहाधीष्मग्रहपीणपहानकः॥ दयाकरः सोम्यमूर्तिः स्व
र्धुः॥ कूकूमश्रुतिः॥ लोकपूजा लोकगुत्र नीतिहानीका नकः॥ ता
नापतिष्मगीनसोवदवद्यः पितामहः॥ रुक्मावहस्यतिस्मृत्वा नामायेतानि

यः प० ता॥ अत्रागीवलवानुधीमानपुत्रवान्मरुवन्नः॥ जीवद्वयं तं मथ्यापि
सचास्यवेनष्ठमिति॥ यः पूरुद्रुनेदिनपीगंधादताम्वने॥ पूष्यदीपापुहा
नेष्ठपुत्रयिज्ञावहस्यति॥ वाज॥ नराजयिज्ञावपीताम्वनिः
रुद्रुने॥ ॥ ॐ मिथीस्तुद्रुपुना॥ वहस्यति॥ गसमीः
॥ ॥ अथ ॐ कस्य॥ ॐ नमो ॐ काया॥ ॐ ककावो ॐ कने

मा ॐ कावनधनसंधीः॥ दिमारः कद्रधवल ॐ शा ॐ ॐ क
रुस॥ नीतिस्तनीति कनीतिमार्गममीयहाधिपः उठानावे
दवेदागः पानगः कतिलात्मविता॥ एगर्जवः वन॥ मसिभुस्तन
संपन्नप्रदा॥ ॐ कस्यतानिनामानि ॐ कस्यवा ॐ कस्यः प० ता॥
आयुर्देनसर्वपुर्णलक्ष्मीचमतिमूर्त्तमा॥ विद्यावैवमिदं

क६६ निरुःसुखी॥ घा न मे मरीच ६ पाशु मखं च लिपु र्वा वं तु ॥
 सुखो सम्यक् कपाशु शु जी मे र य दा च तु ॥ अपि निर्म द द र्य
 पाशु नाहि अनिष्ट नी व तु ॥ ग्रह ना क ति पाशु म क धि नी न
 वि न न न ॥ पाशु म द ग ति पाशु व द पा च वि द ल व प ॥ न
 दा मे मं प ० नि र्वा नी न ना म व ल न्यु ना ॥ स ति व पु ना वि ना

यः ॥ ॐ नमो भगवते ॥ सन्तो मन्द गतिः स्वर्गमष्टकः सम्बुद्ध कोट्य
 मः ॥ गुरुनामः कालालीनः सूर्यपुत्री नवीन वीर्यवती ॥ कुजो वरुणः गन्धकायः लान्
 कः सिंहवासुनः ॥ केतुर्देवपतिवाहः ॥ इन्द्रातोनेर्कनस्तथा ॥ ॐ नमो मन्दः कुव
 नः ॥ ॐ नमो नमः ॥ सूर्यः शाल्यतः ॥ विष्णुर्गणपतिः ॥ कृमानः ॥ ॐ नमो नमः ॥
 कर्णः ॥ ॐ नमो नमः ॥ ॐ नमो नमः ॥ ॐ नमो नमः ॥ ॐ नमो नमः ॥ ॐ नमो नमः ॥

रुद्रधनपद॥ कुनकर्म विधत्ता न सर्वकमावनीधक॥ उक्षीरह॥
 कामनृप॥ कामदेव विजयन॥ ग्रहपिण्डहृत्॥ मन्त्रा नक्षत्रा हस्त
 न॥ मित्तासनस्मिन् नगतिर्महाकाशमहाबल॥ महाप्रहम
 हाकाल॥ कालाज्ञाकालकालक॥ प्रादिरुच्यदाता च मृदुनादि
 द्यनन्द॥ अ॥ अतस्मिन् दूयित॥ अथादृष्टो निधिप्रिया॥ मिथ्या

[illegible]

८२ नवग्रह सानि

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

महाराज

यः सुर्वसदा ॥ विष्णुस्तथा निदिनयीषा न स्वविनव्यति ॥ जमल
गस्तिनवापिगमवप्रकृतागिरा ॥ दक्षस्तुचगम ॥ श्रीतदास्त
वमिर्दय ॥ ० ॥ दुर्जयद्युः ॥ निरुत्तामोपुष्याद्वनाम्बने ॥
विष्णुयलीहप्रतिमा ॥ नशोदुःखाकिमुच्यते ॥ बाधाचान्यप्र
हाना ॥ यः ॥ ० ॥ सुस्तनव्यति ॥ श्रीतारुत्याकिमुच्यते ॥ सु

यतवचनानागीनागादिमुच्यते ननस्तुवमिर्दय ॥ ० ॥ पु
रवाश्चनवाश्चवक्रायतेनायसी ॥ ॥ नानदडवाना ॥
सुर्वनिष्ठास्यपार्थस्यप्रश्ना ॥ हस्तुनेवचन ॥ दक्षानाजिवन
कामि ॥ निरुत्तामोपुष्याद्वनाम्बने ॥ ॥ ० ॥ तिष्ठीरुविष्णुपुना ॥
॥ निष्ठनस्तुवराजसमाफ ॥ ॥ अथनाही ॥ ॥

अथ के गो॥ उ नम के तवे॥ के गुः कालः कलयिता ध्रुम के दुविच
क ४१ लोक के गु म्हा के गुः सर्व के गु रय प्रदा ४॥ गो दा नू द
प्रि या नू दु ४ कु न क म्हा स ग भव त ॥ पलाल ध्रु म्हा सं का ४
वि नू व म्हा धला रु व त ॥ वि नू का ग बलि प्री यी वि वि नू का ग
वा ह नः वि वि नू क म्हा रु ल द वि नू य रु प वी त ध्रु क ॥ त ना य ध

विमही च के मि न या ग्रहा धि यः पञ्च विंशति नामानि कता र्यः
सततं प ० त न स्य न स्याति वाचा न सततं के गु प्र साद त ॥ ध
न धान्य पञ्च नां च रु वे द्दि न्म म्हा य ४॥ ॥ इति श्री
च पु ना ४ के गोः पञ्च विंशति नाम स्तोत्र समाप्ता ॥ ७ ॥

ॐ किं मंगलं मंगलाय स्वाहा ॥ १ ॥ ॐ पित्रां पिंगले वं नि
धप्रसीद रुद्र ॥ २ ॥ ॐ ध्वं श्री ध्वनद ध्वय स्वाहा ॥ ३ ॥ ॐ नमो
श्री मन्त्रि जगन्मोक्षप्रधिष्ठानि धामनिद्रा क्री ॥ ४ ॥ ॐ रुद्रं रुद्रि
क मम मरुदं देहि पत्ररुद्राधिनाथाय स्वाहा ॥ ५ ॥ ॐ नमो
लै मम त्रागठजैरुय स्वाहा ॥ ६ ॥ ॐ सिद्धां सिद्धमसर्वमा

नसमाधय स्वाहा ॥ ७ ॥ ॐ सदां संकटत्रागम्भपत्रमत्राठ
यस्व स्वाहा ॥ ८ ॥ ॐ नमो रुद्रावतिविकटवीनपालिके प्र
सीद स्वाहा ॥ ९ ॥ ॐ नमः उल्कादेव्य ॥
वसिष्ठ उवाच ॥ कथं दः खेनिसरुतः सिद्धि मर्थ मलिनी
मूर्खः समाह्वय कथं दः खेन उवाच वकि सा प्रत ॥ १० ॥

हनिष्यदुत्तवाच॥ नाशं गच्छामसुहृजानो न नाशमदिकं तत॥
पद्मादीनां कथं लब्धं युक्ति नृधुं वनप्रका॥ वदुत्तवाच॥ ४७
नाशं यवदामि उल्काकागं विपक्तिं ॥ श्रीगणेशकाविहृन
धंसर्वसागमवर्द्धनधनधनकनीहीषिव्यउल्कादेव्याप
पूजनं सागच्छपथं तावत्सविपक्तिनाशस्य यी॥ ३७

स्य श्रीउल्कादेव्याकागमं गस्यच्छस्यपि॥ सृष्टिर्दुसमा
ख्याता दहती कुरु उच्यते॥ उल्कादेवी वीजं शुक्लं द्वाभ्य
किं कीचकिलकं ममाधिदू४ स्वयं कुर्याद्विनीवासिनी मन्दमा
नाविष्मलाक्षी सागिनी गधेयानिधी॥ सा निधी सदृशं स्वानीना
षिनी निपूयानिनी॥ स न दायी मादू कनी सिद्धिदा सोऽस्वदा

नथा॥ दूष्ट हृद्गो महामाया सर्वात्रिष्ट पञ्चमसिनी॥ इव दूष्ट
हनी सोम्या दूष्ट ग्रह विमर्दिनी॥ काया रूप नीप धुमपद्माप
पवतिष्ठिवा॥ वेष्टवा नूपिनी गुप्ता गुप्ता किपत्रापत्रा॥ वा
गध्वनी व नारद्वार वा नीरुत नाभिनी॥ रूतिदात्री गह
र्का च भूका न वित्र नूपिणी॥ अष्टपद्म गिनिजा काली ॐ ॐ ॐ

नालयवाभिणी॥ भिन्नप्रिया महाचक्षुः॥ चन्द्रश्च नरु पूजीता
ॐ शेष पश्य नर्म गृह्यं ललाटे व्यासु वंसिनी॥ अष्टविद्यावि
ह नंदन्य॥ विष्णुः॥ केषु दक्षरं॥ जय नस्याय नोदवा॥ दृव्या
सर्वसदायिनी॥ अरु कायनिद्रकाया॥ कुनायैरं वधानिध्या॥
गुरु रुकाय ॐ काय देवीर गनि पत्राय च॥ देय ॐ श्रीग

जाठव. सस्यं न नर्षं सया ॥ ॥ ० ॥ ति म नूष्मा ग म के ला स
ख ६५ दे श्री उल्का दे वा सी गी ॥ ॥ जी संक टाय वि न ह ॥
विपति हा नि धा धी म ह क ना गी दी प्र ची द या नृ षं क टायः ॥

सवत् २६३ धो ष वृ ष ॥ ॥ अ वृ मी ॥ स्वा ति न दू ॥ ॥ ल य

॥ ॥ म वा स ॥ ॥ थ कू ड न व ग्र ह या पार्थ चो य धू न का
श ल ठ र ॥ ॥ म पि त दे व कू ष गिं ड म ग ल ॥ ॥ र्सी १५२ साल पो

॥ ॥ वं ला स्वा य वि ष ह लं म ना य धी म हि तं चो व ग ले प्र चो द या ॥ ॥
॥ ॥ का रि का यो वि ष ह ॥ ॥ म र्सा न वा सि नी धि म हि
॥ ॥ त नो प्र चो द या ॥ ॥

ॐकारमायं प्रवदति संतो वाचं श्रुती नाम पि सं गृह्णाति । गमा न नंदे व गणा न संधि
मजे ह म के नु कृता व तं सं ॥ पादारवि द्यार्चन तत्परा गं संसारदा वा न ले भ गदक्ष
॥ निरंतरं निर्गतदा न तो ये स नौ मि वि प्रे म्भुट म भुटो भं ॥ कृतां गरा गं न व कुं
कु मे न . मता लि मा ली म द प क म नो ॥ विवारयं तं निज कर्ण ता लैः को वि स्मरे
पुत्र म न क श नो ॥ शो भो जं गजूट विवा सि गं जं ज लं स मा नी य क रा भुजे
न ॥ ली ला भिरा मा धि व म प्य ये नं ग ज न नं भ क्ति यु ता भ व ति ॥ कु मार भु

क्रौ पु न रा म ह तोः पयो ध रौ प व त रा ज पु ष्याः । प्र द्या ल यं तं कर णा कर णा मु
इ न तं ना ग मु त्त्वं भ जा मि ॥ त्व या त मु क्तु त्प ग जा त्प ह तं ये शी क राः पु ष्कर
रं ध्र मु क्तोः । यो मा क्तु ने वे वि च र ति ता रो का ला त्म ना मो ति क तु ल्य भा सः ॥
क्रौ डार ते वा रि नि धो ग जा त्पे वे ला म ति का म ति ना रि प रौ । क ल्या व सा
नं प रि चिं त्य दे वा के ना श ना थं भु ति मिः लु व ति ॥ ना गा ने ने ना ग क
तो न नो जे श्री य रा ते दे व क मार सं धे ॥ त्व वि द्य णा का र ग तं वि हा य मो प्र

पहुः कनुकतामनः ॥ महासुखसमस्तपुरे रजस्तोमध्यापय तं स
कलागमांथं । देवान्मन्त्रिन्मन्त्राजनेकमिच्छंहे रघुमकी
सामाश्रयामि ॥ पादाभ्यां प्रतिवामनाभ्यां कृतार्थयत्नं कृ
पया धरित्री । अकारणं कारणमाप्नुवात् । तन्नागवन्तं न जहा
ति चेत्तः ॥ येनार्चितं सत्यवतीसुताय पुराणमालिख्य विष्णु क
द्या । तं चंद्रमौलेस्तत्रयंतपोभिराश्रमा नन्द्य न भजामि ॥

पदं श्रुतीनां मपदं सुतीनां लोकावतारं परमात्ममूर्तेः ॥ नागा
त्मको वापुस्त्वोत्तमको वै त्वमेवमाद्यभजविष्णुराजं ॥ पाशाकुशो भगव
दं त्वभीष्टं करैर्दधानं करं प्रमुक्तैः ॥ मुक्ताक्षलाभौ पृथुकैः सरोधैः
संविन्य प्रगंशिवयो भजामि ॥ अनेकं मे कंगजे कदत्तं बीभत्स
पंगजदादिवीजं । बुधेति संबुधं विदोषदन्ति तं शक्तुस्तु न शरणां भ
जामि ॥ ३१ के स्थिता या निजवन्तु भाया पुराणमुजा लोकनलो